कला एवं सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा

मालविका राजनारायण

हर महीने, कुछ दिन मैं अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में कला की कक्षाओं का अवलोकन करती हूँ। कलाओं को सीखने की प्रक्रिया को समझने के साथ ही यह मुझे इस बात को समझने के लिए अतीव मूल्यवान लगता है कि किस तरह यह प्रक्रिया शिक्षा के अन्य सभी आयामों से जुड़ी हुई है। एक कला सुगमकर्ता होने के नाते, मैं कला शिक्षकों के सामने मौजूद रोज़मर्रा की चुनौतियों से परिचित हूँ। सभी अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के दृश्य कलाओं और संगीत शिक्षकों से बने एक समूह के रूप में, हमने लगातार 5 साल से भी ज़्यादा समय तक स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों में बेहतर कक्षा व्यवहारों को विकसित करने के लिए काम किया है।

ऐसा माना जाता है कि कला 'स्वतः' ही सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (Socio-Emotional and Ethical Learning) (एसईईएल) को प्रोत्साहित करती है। आज के समय में हम शिक्षकों और पालकों में कलाओं के सीखने के फ़ायदों और इस हक़ीक़त के बारे में जागरूकता विकसित होते देख रहे हैं कि किस प्रकार यह बच्चों के समग्र विकास और कल्याण में मदद करता है। शिक्षक और पालक यह भी चाहते हैं कि उनके बच्चे 'अच्छी तरह' से चित्र बनाना सीखें। यह आकांक्षा अक्सर कला की गतिविधियों के उद्देश्य को मुख्यतः तकनीकी कौशलों तक सीमित कर देती है, जो बच्चों के सीखने के फ़ाउंडेशनल स्टेज में सूक्ष्म प्रेरक कौशलों के विकास (हाथ-आँख का संयोजन और सामान्य वस्तुओं व उपकरणों का नियंत्रण) से सम्बन्धित होती हैं। बेशक यह भी महत्त्वपूर्ण है लेकिन हम बिना किसी सचेत योजना के सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा पर ध्यान देने की उम्मीद नहीं कर सकते।

बच्चों को व्यस्त रखने के लिए वर्कशीट में रंग भरना एक आम गतिविधि बन गई है, और उन्हीं की तारीफ़ की जाती है जो रेखाओं के भीतर 'ढंग से' रंग भरते हैं। लेकिन क्या ऐसी वर्कशीटों में बच्चों के अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त हो पाती हैं? अगर वे वर्कशीट में अपनी पसन्द के रंग भी भर रहे हैं, तब भी क्या हम इस बात के लिए मुतमईन हो सकते हैं कि बच्चों द्वारा किया गया रंगों का चुनाव उन भावनाओं और अहसासों से मेल खाता है जिन्हें वे सचेत तौर पर अभिव्यक्त करना चाहते हैं?

मेरी कला की कक्षा में कक्षा-2 के एक बच्चे ने स्लेट पर चाक से एक तस्वीर बनाई। इसमें उसने दिखाया कि दो सड़कें एक-दूसरे को काट रही हैं। इससे स्लेट चार भागों में बँट गई थी। जहाँ दोनों सड़कें एक-दूसरे को काट रही थीं उसके पास ही एक बस और एक दो पहिया गाड़ी थी। जब मैंने पूछा कि उस दृश्य में क्या हो रहा है, तो उसने बताया कि दोनों गाड़ियाँ आपस में भिड़ गई थीं। लोग घायल हो गए थे और एक एम्बुलेंस बुलाई गई थी और उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। उसने कुछ कक्षाओं में बार-बार यही चित्र बनाया। थोड़ा चिन्तित होते हुए मैंने क्लास टीचर को यह बताया। फिर उन्होंने बच्चे की देखभाल करने वालों से पूछा कि क्या बच्चे ने किसी सड़क दुर्घटना को देखा है, और उस पर इसका प्रभाव पड़ा है। परिवार ने हमें आश्वस्त किया कि ऐसी कोई घटना नहीं घटी है और बच्चे को यह विचार टीवी देखने से आया होगा! कला की खुली गतिविधियाँ बच्चों को यह मौक़ा देती हैं कि वे उन विभिन्न विचारों और अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकें जिनसे उनका सामना हुआ है। उनके कला के काम और उनसे होने वाले हमारे संवाद, दोनों के माध्यम से उनकी भावनात्मक अभिव्यक्ति का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। पहले से बनी हुई मछली, फूल या तितली वाली रंग भरने की वर्कशीटों में सम्भवतः उनके व्यक्तिगत और भावनात्मक कहन के लिए जगह नहीं बचती।

आइए, एनसीएफ़ में उल्लिखित कुछ विचारों और कक्षा में उनके निहितार्थ पर नज़र डालते हैं।

सकारात्मक आत्म-अवधारणा

जब बहुत छोटे बच्चे हमें अपनी गोंचा-गांची (scribbles – स्क्रिबल) दिखाते हैं, और उन्हें सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं तो उन्हें लगता है कि उन्हें समझ लिया गया है। बच्चे कभी-कभी अपनी इन अस्पष्ट रेखाओं के इर्द-गिर्द अपनी ख़ुद की कहानी गढ़ लेते हैं। जब वे चेहरे या मनुष्यों के सीधी रेखाओं वाले चित्र बनाने लगते हैं, तो मैं उनसे पूछती हूँ - *यह व्यक्ति कौन है?* उन मामलों में जहाँ ज़्यादा लोगों और चीज़ों के चित्र होते हैं, मैं पूछती हूँ - *इस चित्र में तुम कहाँ हो? इस चित्र में अन्य लोग कौन हैं? क्या यह तुम्हारा घर/कुत्ता/सामान है?* इन सवालों से उन्हें अपने परिवारों और अपने निकट के परिवेश के बारे में बात करने का मौक़ा मिलता है।

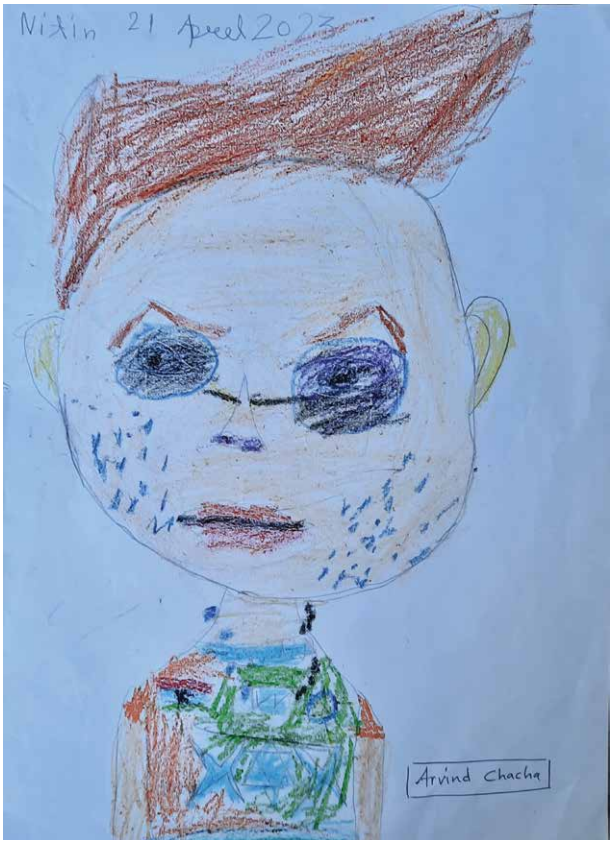

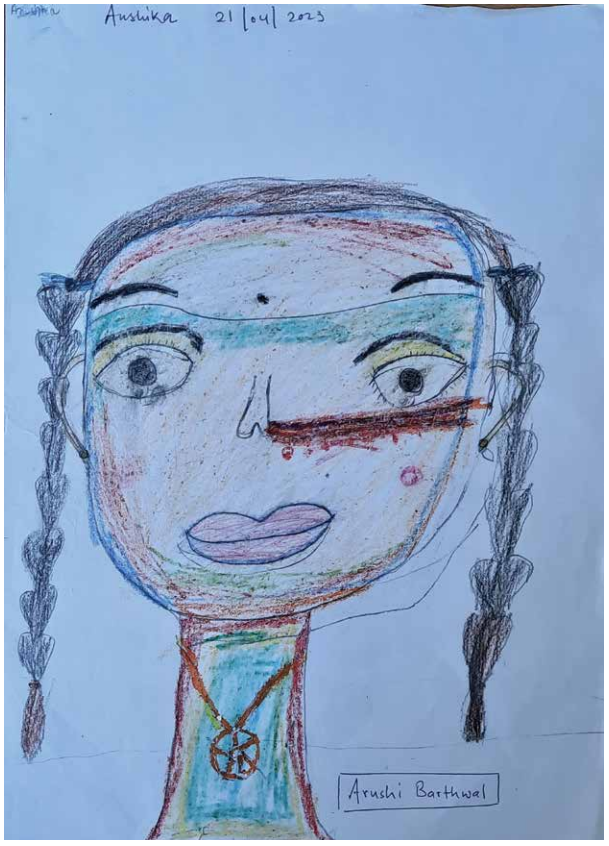

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उत्तरकाशी के कक्षा-2 के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई ख़ुद को, दोस्तों/परिवार को दर्शाती कलाकृतियाँ।

मैंने अन्य कला शिक्षकों को चित्र बनाते हुए बच्चों से बातें करते देखा है : *यह आदमी कैसे कपड़े पहनता है? क्या तुम मुझे दिखा सकती हो? अपने कपड़ों को देखो... इसमें एक कालर है, बटन हैं, बाजू हैं... क्या तुम्हारे चित्र में यह व्यक्ति*

इसी तरह का कुछ पहने हुए है? क्या यह कोई बच्चा है या बड़ा आदमी है? इस तरह की बातों के बाद बच्चे न केवल ख़ुद को और अपनी चीज़ों को देखते हैं बल्कि अपने आस-पास बैठे दोस्तों का भी बारीकी से अवलोकन करते हैं। वे इन व्यक्तिगत अवलोकनों को अपनी तरह से दर्ज करते हैं। हो सकता है वास्तविक न लगें लेकिन ब्यौरों की एक नई दुनिया खुल जाती है जब बच्चे चप्पल, बिन्दियों, चूड़ियों, बटनों, बाल बनाने के तरीक़ों, बस्तों, दाँतों और यहाँ तक कि किसी चेहरे पर लुढ़कते आँसुओं को भी चिन्हित करते हैं। उनका आत्मविश्वास और बढ़ता है और वे अपने ख़ुद के विचार और अभिव्यक्तियों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं जब इनके बारे में कक्षा के भीतर सभी के बीच चर्चा होती है, उन्हें प्रदर्शित किया जाता है और देखा जाता है।

कक्षा-1 के संगीत कक्ष में मैंने एक शिक्षिका को बच्चों को तालियों, चुटकियों, जाँघों पर थाप देने और ज़बान और तालू के संयोग के द्वारा आवाज़ निकालते हुए सामान्य ध्वनि पैटर्न सिखाते हुए देखा। इसे 'लीडर का अनुसरण करो' के प्रारूप में खेला गया। इसमें हर एक बच्चे की बारी आती, और हर एक को यह आज़ादी दी गई कि वे अपनी तरह से – अपनी गति और अपने पैटर्न से – इन आवाज़ों को प्रस्तुत कर सकते हैं। शेष बच्चे उनका अनुसरण करते थे। यहाँ एक बार फिर, बच्चों को यह मौक़ा दिया गया कि वे ख़ुद के बारे में सकारात्मक विचार विकसित कर सकें क्योंकि उनके प्रत्येक विचार को वैधता मिल रही थी और उसे पूरे समूह द्वारा दोहराया जा रहा था।

भावनात्मक जागरूकता एवं नियमन

मैं कक्षा-1 में एक कला शिक्षिका के साथ थी। बच्चे कुछ रचने के लिए काग़ज़ की शीट हासिल करने को बेक़रार थे। इसी बीच दो बच्चों में कुछ हाथापाई हो गई। उनमें से एक इतना ग़ुस्सा हो गया कि उसने दूसरे बच्चे को मार दिया। शिक्षिका ने हस्तक्षेप किया और उनसे कहा कि वे अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाएँ। फिर भी, मुद्दा सुलझा नहीं था। जो बच्चा ग़ुस्सा हुआ था, वह अभी भी ग़ुस्से में था और परेशान था। उस दिन के कार्य को पूरा करना उसके लिए कोई तार्किक विकल्प नहीं लग रहा था। कक्षा के अन्य बच्चे अपना काम शुरू करने के लिए बेचैन थे और शिक्षिका बच्चों को सामग्री बाँटने में व्यस्त हो गई थीं।

मैं उस परेशान बच्चे को देख रही थी और फिर मैंने उससे बात करने का निर्णय किया। मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ। उसने शिकायत की कि उस दूसरे बच्चे ने उससे कुछ ख़राब बात बोल दी थी। मैंने उससे पूछा, 'क्या इसी कारण से तुम इतना ग़ुस्सा हुए?' उसने 'हाँ' में सिर हिलाया। 'क्या इसीलिए तुमने उसे मार दिया?' मैंने उससे धीरे से पूछा और उसने फिर से 'हाँ' में सिर हिलाया। मैंने उससे कहा मैं समझ गई कि तुम ग़ुस्से में हो। जब लोग मुझसे अच्छे से बात नहीं करते तो मैं भी ग़ुस्से में आ जाती हूँ और परेशान हो जाती हूँ। वह बच्चा रोने लगा। सम्भवतः वह निश्चिन्त हो गया कि इसके लिए किसी ने उसे डाँटा नहीं और किसी और ने उसकी निराशा को समझा। हमने इस बारे में बात की कि ग़ुस्सा होने पर किसी को मारने की बजाय वह दूसरी तरह से भी निपट सकता था। एक तरीक़ा यह हो सकता था कि अगले व्यक्ति को बताया जाए कि जब वे ख़राब बातें कहते हैं तो हमें बुरा लगता है और धक्का पहुँचता है। और दूसरा तरीक़ा था कि उस जगह से हट जाएँ और कहीं और बैठ जाएँ।

मैंने हाथापाई में शामिल दोनों बच्चों से कहा कि चित्रकारी करते वक़्त, आज जो भी हुआ उसके बारे में सोचें। उनके चित्र में जो कुछ घटा था वह कुछ भी नहीं दिखाई दिया। लेकिन उन्हें चित्र बनाने और उनमें रंग भरने का समय देने से उन्हें शान्त होने, पुनः अपना ध्यान केन्द्रित करने और यह महसूस करने में मदद मिली कि उन्हें कोई समझ रहा है। शिक्षिकाओं के लिए यह चुनौती होती है कि उन्हें एक कक्षा में अकेले ही प्रत्येक बच्चे की ज़रूरतों और मसलों को सम्हालना पड़ता है। इसके लिए कुछ रणनीतियाँ पहले से ही तैयार करके रखने से मदद मिलती है। बच्चों की भावनाओं को महत्त्व देना, और उनके अहसासों को अभिव्यक्त करने वाले शब्द अथवा चित्र तलाश करने में उनकी मदद करना एक ऐसी ही रणनीति हो सकती है।

सामाजिक विकास

कलाएँ बच्चों के लिए साथ में काम करने और अपने सामान दूसरों से साझा करने के लिए अनेक अवसर तैयार करती हैं। मैं कक्षा-1 के विद्यार्थियों के एक समूह का अवलोकन कर रही थी जब वे एक बड़ी-सी तस्वीर पर एक साथ काम कर रहे थे। कुछ ने नेतृत्व करते हुए ड्राइंग शीट पर अलग-अलग जगहें चिन्हित कीं और समूह के प्रत्येक सदस्य को एक-एक जगह काम करने के लिए सौंप दीं। मैंने ध्यान दिया कि एक बच्चा भागीदारी नहीं कर रहा था और बैठा हुआ था। जब मैंने उससे कारण पूछा कि वह कुछ क्यों नहीं कर रहा है तो उसने कहा, 'मुझे चित्र बनाना नहीं आता।' तुरन्त समूह के कुछ बच्चों ने फुसफुसाया, 'दीदी इसको नहीं आता है।' क्षुब्ध होकर मैंने उनसे कहा कि ड्राइंग शीट पर थोड़ी-सी जगह उसके लिए भी बचाएँ। फिर मैंने उस बच्चे से पूछा कि क्या उसे पेन्सिल पकड़ना आता है। उसने कहा 'हाँ'। मैंने उसे कहा क्या वह इसे काग़ज़ पर रखकर अपना हाथ फिरा सकता है। उसने कहा वह ऐसा कर सकता है। मैंने बताया इसी तरह तो हम सब चित्र बनाते हैं। अगर वह जानता है तो वह भी चित्र बना सकता है।

मैंने उसे पेन्सिल दी और उसे कहा कि मुझे दिखाए कि वह कैसे इसे काग़ज़ पर चलाता है। उसने एक दरवाज़े और एक खिड़की वाला छोटा-सा एक घर बनाया। मैंने सभी से कहा कि उसकी चित्रकारी देखें और उनसे पूछा कि क्या वह चित्र बना सकता है या नहीं। वे सभी मुस्कराए और इस बात को मान गए कि वह कर सकता है।

कई कला शिक्षिकाएँ नियमित रूप से कक्षा में कलाकृतियों को प्रदर्शित करने और उन पर चर्चा करने का समय निकालती हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे अन्य लोग क्या सोचते और महसूस करते हैं, उसे सुनते हैं और उस पर ध्यान देते हैं। वे कई तरह की अभिव्यक्तियों की सराहना करना सीखते हैं। सभी बच्चों के साथ सकारात्मक रिश्ता बनाने में शिक्षिका की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है, ख़ासतौर से उन बच्चों के साथ जो शर्मीले होते हैं, या जिनका आत्मविश्वास कम होता है। इनमें से कई समस्याएँ हल हो सकती हैं अगर शिक्षिका कक्षा की पारस्परिक गतिविधियों पर नज़र रखती हों, उनके प्रति सचेत और संवेदनशील हों। कला की कक्षा में सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के विकास में सहयोग करने वाले प्रमुख तत्व हैं - शिक्षणविधि और कक्षा में सुगमता बनाना, न कि बस कोई भी आकर्षक कला गतिविधि।

मालविका राजनारायण वड़ोदरा, गुजरात में रहती हैं। वे एक दृश्य कलाकार और शिक्षक हैं। वे एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ौदा के फाइन आर्ट्स विभाग से चित्रकला में स्नातकोत्तर हैं। उन्होंने भारत और भारत से बाहर कई जगह अपने काम की प्रदर्शनी लगाई है और आर्टिस्ट-इन-रेसीडेंस कार्यक्रमों में हिस्सेदारी की है। वे अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के लिए कला की रिसोर्स पर्सन के रूप में काम करती हैं और अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,भोपाल में अतिथि शिक्षक भी हैं। वे भारत और मध्य एशिया की लघु चित्रकला परम्पराओं में, और साथ ही, दुनियाभर की विविध वस्त्र कलाओं और शिल्पों में दिलचस्पी रखती हैं। उनसे *malavika.rajnarayan@azimpremjifaoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अफसाना पठान

एक जीवन्त गाँव के बीचोबीच, आँगनवाड़ी केन्द्र के पास, एक शाम बच्चों के समूहों के साथ बीतती है जो ख़ुशी-ख़ुशी विभिन्न प्रकार के खेल, खेल रहे हैं। शिक्षाविद उनकी सामाजिक भागीदारी को देखकर प्रसन्न होते हैं। विभिन्न प्रकार के खेल – चीज़ों के साथ, जैसे प्लास्टिक के कप के साथ; प्रतीकात्मक खेल जिसमें वे मिट्टी से विभिन्न आकृतियाँ बनाते हैं; नियमों वाले खेल, जैसे लागोरी; सामाजिक-नाटकीय खेल – बच्चों का एक समूह 'गणेश जुलूस' निकालने का अभिनय करता है; और निश्चित रूप से, शारीरिक खेल भी जैसे कूदना, कुलाँचे भरना और दौड़ना आदि, ये सभी बच्चों की समृद्ध कल्पना और स्थानीय परम्पराओं से उनके सम्बन्ध को प्रदर्शित करते हैं। यह दृश्य जादुई है।

- उमामहेश्वर राव जग्गेना, जादुई पिटारा - बचपन में खेलों का जादू, पेज 58